SAARTHI · सारथी

करियर मार्गदर्शन पोर्टल · Career Guidance Portal

"सही मार्गदर्शन, उज्ज्वल भविष्य।"

करियर शीट · CAREER SHEET

Junior Personal Assistant (Court Stenographer) — Rajasthan High Court

कनिष्ठ निजी सहायक राजस्थान उच्च न्यायालय का आशुलिपिक पद है — वह कर्मचारी जो न्यायाधीश के श्रुतलेख को आशुलिपि में लेता है और फिर उसे कंप्यूटर पर उतारता है। न्यायालय में यह काम सामान्य कार्यालयी टंकण से भिन्न है: जो आदेश एवं निर्णय...

इस करियर की पूरी जानकारी — स्कैन करें

वेतन, परीक्षा, कॉलेज, प्रवेश के रास्ते और आगे के कदम — सब पोर्टल पर।

career.gsssjethantri.in/#/career/raj-court-stenographer

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जेठन्तरी

Govt. Sr. Sec. School, Jethantri · ब्लॉक समदड़ी · बालोतरा (Block Samdari · Balotra)

www.gsssjethantri.in · career.gsssjethantri.in

सुशील कुमार शर्मा
प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. जेठन्तरी · मास्टर ट्रेनर
Principal, GSSS Jethantri · Master Trainer

श्री चेनाराम चौधरी
प्रधानाचार्य, डाइट बाड़मेर
Principal, DIET Barmer

श्रीमती संघमित्रा
वरिष्ठ व्याख्याता, डाइट बाड़मेर (सहयोग)
Sr. Lecturer, DIET Barmer (Support)

भरत चौधरी
अभिकल्पना व विकास · व्याख्याता (इतिहास)
Designed & developed · Lecturer (History)

विशेष धन्यवाद · SPECIAL THANKS

सुरेन्द्र सिंह राठौड़
व्याख्याता (इतिहास) · रा.उ.मा.वि. कानाना

सुरेश कुमार सैन
व्याख्याता (भूगोल) · रा.उ.मा.वि. रामसीन मूंगड़ा

वनिता कुमारी
व्याख्याता (इतिहास) · रा.उ.मा.वि. रामसीन मूंगड़ा

कमलेश चौधरी
व्याख्याता (राजनीति विज्ञान) · रा.उ.मा.वि. टापरा

करियर मार्गदर्शन कार्यशाला, डाइट बाड़मेर (14–17 जुलाई 2026) में विकसित व लोकार्पित

Developed & unveiled at the Career Guidance Workshop, DIET Barmer (14–17 July 2026)

यह एक स्वतंत्र परियोजना है, जो सरकार की आधिकारिक करियर-मार्गदर्शन सामग्री पर आधारित है। · An independent project based on the Government's official career-guidance content.

1 यह करियर क्या है

कनिष्ठ निजी सहायक राजस्थान उच्च न्यायालय का आशुलिपिक पद है — वह कर्मचारी जो न्यायाधीश के श्रुतलेख को आशुलिपि में लेता है और फिर उसे कंप्यूटर पर उतारता है। न्यायालय में यह काम सामान्य कार्यालयी टंकण से भिन्न है: जो आदेश एवं निर्णय बोले जाते हैं वे अंततः विधिक दस्तावेज़ बनते हैं, इसलिए शब्दों की सटीकता का महत्त्व यहाँ असामान्य रूप से अधिक है। यह पद भी न्यायालय स्वयं भरता है, अपनी प्रतियोगी परीक्षा से, अपने कर्मचारी सेवा नियम 2002 के अंतर्गत। इस पद की एक बात ऐसी है जो कहीं विज्ञापित नहीं होती और जिसे जान लेना निर्णायक है: भर्ती दो भाषा-समूहों में होती है — अंग्रेज़ी एवं हिंदी — और हिंदी समूह की शर्तें दोनों मापों पर आसान हैं। अंग्रेज़ी में श्रुतलेख 80 शब्द प्रति मिनट की गति से दिया जाता है और उतारने के लिए 60 मिनट मिलते हैं; हिंदी में गति 70 शब्द प्रति मिनट है और समय 70 मिनट।

2 एक नज़र में

न्यूनतम योग्यता	भारत में विधि द्वारा स्थापित किसी विश्वविद्यालय से स्नातक अथवा मान्यता प्राप्त समकक्ष परीक्षा, तथा कंप्यूटर का प्रारंभिक ज्ञान — नियम किसी प्रमाण-पत्र का नाम नहीं लेता
भर्ती संस्था	राजस्थान उच्च न्यायालय — भर्ती न्यायालय स्वयं करता है, कर्मचारी सेवा नियम, 2002 के अंतर्गत
आयु-सीमा	18 से 40 वर्ष, आवेदन की अंतिम तिथि के बाद आने वाली 1 जनवरी को (नियम 8) — आरक्षित वर्ग एवं महिला अभ्यर्थियों को ऊपरी आयु-सीमा में छूट मिलती है (विवरण नीचे)
आरंभिक वेतन	सेवा नियमों में पे मैट्रिक्स का स्तर नहीं दिया — विज्ञप्ति देखें
माँग	दो भाषा-समूहों में भर्ती — अंग्रेज़ी में श्रुतलेख 80 शब्द प्रति मिनट, हिंदी में 70; दोनों के साथ कंप्यूटर गति परीक्षा अनिवार्य

3 क्या-क्या चाहिए

रुचियाँ

- भाषा, श्रुतलेख एवं शब्दों की सटीकता में रुचि
- गति एवं शुद्धता वाला कौशल साधना
- न्यायालय की कार्यवाही एवं विधिक दस्तावेज़ों के निकट काम करना

क्षमताएँ

- सुनते हुए तेज़ी से लिखने की क्षमता — यही इस पद का मूल कौशल है
- एकाग्रता एवं धैर्य — लंबी कार्यवाही बिना चूक के लेनी होती है
- चुनी हुई भाषा पर मज़बूत पकड़, क्योंकि श्रुतलेख उसी में उतारना होता है

ज़रूरी कौशल

- आशुलिपि — हिंदी अथवा अंग्रेज़ी में, जिसमें आप समूह चुनें
- श्रुतलेख को सही एवं पठनीय रूप में उतारना
- गोपनीयता, क्योंकि सामग्री विचाराधीन मामलों की होती है
- कंप्यूटर पर तेज़ एवं शुद्ध टंकण, न्यूनतम 8,000 डिप्रेशन प्रति घंटा
- विधिक एवं न्यायालयी पारिभाषिक शब्दावली — सेवा में सीखी जाती है
- न्यायालय की प्रक्रिया एवं अभिलेख की समझ

4 कैसे पहुँचें

1. कक्षा 12 किसी भी संकाय से उत्तीर्ण करें, फिर किसी भी विषय में स्नातक करें। नियम केवल स्नातक होना माँगता है — विषय की कोई शर्त नहीं और विधि की डिग्री आवश्यक नहीं।

2. अब वह निर्णय लीजिए जो इस पूरी राह को तय करता है: आप किस भाषा में आशुलिपि सीखेंगे। भर्ती दो समूहों में होती है और उनकी शर्तें बराबर नहीं हैं। समूह-क (अंग्रेज़ी) में श्रुतलेख 80 शब्द प्रति मिनट की गति से आठ मिनट दिया जाता है और उसे कंप्यूटर पर उतारने के लिए 60 मिनट मिलते हैं। समूह-ख (हिंदी) में गति 70 शब्द प्रति मिनट है और उतारने के लिए 70 मिनट। अर्थात् हिंदी में दस शब्द प्रति मिनट कम लिखना है और दस मिनट अधिक समय है — दोनों माप हिंदी के पक्ष में हैं।

3. इसका व्यावहारिक अर्थ हिंदी माध्यम के विद्यार्थी के लिए बड़ा है। इस पोर्टल की अधिकांश प्रतियोगी परीक्षाओं में अंग्रेज़ी एक बाधा होती है; यहाँ नियम स्वयं हिंदी वाले रास्ते को आसान रखता है। यदि आपकी हिंदी स्वाभाविक रूप से मज़बूत है तो समूह-ख चुनना केवल सुविधा नहीं, गणित का निर्णय है। साथ ही यह भी ध्यान रहे कि आप एक ही समूह चुनते हैं, इसलिए आशुलिपि उसी भाषा में साधनी है — और यह वर्ष भर का अभ्यास माँगती है, इसलिए निर्णय जल्दी लेना उचित है।

4. कंप्यूटर की गति भी साथ-साथ बनाएँ, क्योंकि समूह-ग सभी के लिए अनिवार्य है, चाहे आपने कोई भी भाषा-समूह चुना हो। इसमें कंप्यूटर पर गति परीक्षा होती है जिसमें न्यूनतम 8,000 डिप्रेशन प्रति घंटा आवश्यक है, और आँकड़े हिंदी में, अंग्रेज़ी में अथवा दोनों भाषाओं में भरे जा सकते हैं। यह परीक्षा दो प्रश्न-पत्रों में होती है — गति एवं दक्षता — प्रत्येक 50 अंकों का।

5. कंप्यूटर की योग्यता के लिए कोई प्रमाण-पत्र खरीदने की आवश्यकता नहीं है। नियम केवल "कंप्यूटर का प्रारंभिक ज्ञान" माँगता है और आर.एस.-सी.आई.टी. अथवा किसी अन्य पाठ्यक्रम का नाम नहीं लेता। ध्यान दें कि यह राजस्थान सचिवालय के लिपिक पद से भिन्न है, जहाँ नामित प्रमाण-पत्रों की सूची में से एक अनिवार्य है — दोनों को एक न मानें।

6. आयु 18 से 40 वर्ष के बीच होनी चाहिए, 1 जनवरी को गणना करके, और विज्ञप्ति उच्च न्यायालय की अपनी वेबसाइट पर आती है — राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड पर नहीं।

प्रमुख परीक्षाएँ

- चयन की संरचना असामान्य है और उसे समझ लेना आवश्यक है। परीक्षा दो वैकल्पिक समूहों में दी जाती है — समूह-क अथवा समूह-ख — और उनके साथ समूह-ग अनिवार्य रूप से उत्तीर्ण करना होता है। नियम के शब्दों में, अभ्यर्थी को उस समूह का विषय उत्तीर्ण करना होता है जिस पद के लिए उसने आवेदन किया है, तथा समूह-ग अनिवार्यतः उत्तीर्ण करना होता है। अर्थात् भाषा का चुनाव पद के चुनाव के बराबर है — कनिष्ठ निजी सहायक (अंग्रेज़ी) एवं कनिष्ठ निजी सहायक (हिंदी) दो अलग पद हैं।
- इस अंतर का अर्थ यह नहीं कि हिंदी का पद कम मूल्य का है — दोनों एक ही सेवा एवं एक ही स्तर के पद हैं। अर्थ केवल यह है कि जिस अभ्यर्थी की दोनों भाषाओं में पकड़ लगभग बराबर है, उसके लिए हिंदी का समूह चुनना अधिक समझदारी है, और जिसकी हिंदी मज़बूत है उसके लिए तो प्रश्न ही नहीं उठता। यह वह निर्णय है जो आशुलिपि सीखना आरंभ करने से पहले लेना चाहिए, क्योंकि उसके बाद बदलना कठिन है।
- कंप्यूटर की योग्यता पर एक बात दोहराने योग्य है क्योंकि यह इस पोर्टल पर भ्रम का स्रोत है। यहाँ नियम केवल "कंप्यूटर का प्रारंभिक ज्ञान" माँगता है; पहले नियम में डोएक, कोपा, आर.एस.-सी.आई.टी. आदि की सूची थी और उसे 2014 की अधिसूचना से हटाकर यह सामान्य वाक्य रखा गया। इसके विपरीत राजस्थान सचिवालय के लिपिक ग्रेड-II पद पर वही सूची आज भी लागू है और उसमें से एक योग्यता अनिवार्य है। दोनों लिपिकीय संवर्ग हैं, काम मिलता-जुलता है, पर शर्त उलटी है — इसलिए एक के आधार पर दूसरे का अनुमान लगाना यहाँ महँगा पड़ता है।
- अब वह तुलना जो कहीं और नहीं मिलती और जो इस पृष्ठ का सबसे उपयोगी अंश है। समूह-क, अंग्रेज़ी: आशुलिपि का श्रुतलेख आठ मिनट, गति 80 शब्द प्रति मिनट, 100 अंक; फिर उस श्रुतलेख को कंप्यूटर पर अंग्रेज़ी में उतारने के लिए 60 मिनट। समूह-ख, हिंदी: आशुलिपि का श्रुतलेख आठ मिनट, गति 70 शब्द प्रति मिनट, 100 अंक; फिर हिंदी में उतारने के लिए 70 मिनट। दोनों अंतर एक ही दिशा में हैं — हिंदी में कम गति से लिखना है और अधिक समय में उतारना है।
- समूह-ग सबके लिए है और उसे हल्के में नहीं लेना चाहिए: कंप्यूटर पर गति परीक्षा, न्यूनतम 8,000 डिप्रेशन प्रति घंटा, आँकड़े हिंदी अथवा अंग्रेज़ी अथवा दोनों भाषाओं में, तथा दो प्रश्न-पत्र — गति एवं दक्षता — प्रत्येक 50 अंकों का। यह वही मानक है जो इसी न्यायालय के कनिष्ठ न्यायिक सहायक पद पर लगता है, इसलिए दोनों पदों की तैयारी का यह हिस्सा साझा है और एक ही अभ्यास से दोनों की तैयारी होती है।
- नाम-परिवर्तन की एक बात दर्ज करने योग्य है: 2004 से पहले इस पद को "आशुलिपिक" (स्टेनोग्राफ़र) कहा जाता था और उसे "कनिष्ठ निजी सहायक" से प्रतिस्थापित किया गया। यदि आपको पुरानी विज्ञप्तियों अथवा सामग्री में "आशुलिपिक" मिले, तो वह इसी पद की बात कर रही है।

- ऊपरी आयु-सीमा में छूट — अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अति पिछड़ा वर्ग एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के पुरुष अभ्यर्थियों को 5 वर्ष; सामान्य वर्ग की महिला अभ्यर्थियों को 5 वर्ष; तथा इन्हीं वर्गों की महिला अभ्यर्थियों को 10 वर्ष। इसका सीधा अर्थ यह है कि किसी पद के आगे लिखी बिना छूट वाली आयु किसी आरक्षित वर्ग की महिला के लिए दस वर्ष कम बताती है — यदि आप उस श्रेणी में हैं तो अपनी पात्रता छूट जोड़कर ही तय करें। राजस्थान में सीधी भर्ती में महिला अभ्यर्थियों के लिए 30% पद श्रेणीवार आरक्षित रहते हैं। विधवा एवं परित्यक्ता (तलाकशुदा) महिला अभ्यर्थियों के लिए कोई ऊपरी आयु-सीमा नहीं — नियमों में यही शब्द हैं। राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवा (संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा द्वारा सीधी भर्ती) नियम, 1999 के नियम 13(9) में, तथा राजस्थान चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधीनस्थ सेवा नियमों के इसी परंतुक में यह प्रावधान दर्ज है, और आर.पी.एस.सी. की विज्ञप्तियाँ भी इसे दोहराती हैं। विधवा को सक्षम अधिकारी से पति का मृत्यु प्रमाण-पत्र और परित्यक्ता को तलाक का प्रमाण देना होता है। छूट एवं आरक्षण की सटीक शर्तें उसी भर्ती की विज्ञप्ति में दी जाती हैं।

5 कहाँ से पढ़ें

सरकारी संस्थान

- University of Rajasthan and the state universities — a graduation in any subject qualifies — जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर एवं कोटा (https://uniraj.ac.in/)
- Government ITIs and polytechnics — stenography and secretarial practice courses, where the shorthand is actually taught — राजस्थान के अनेक ज़िलों में (https://dte.rajasthan.gov.in/)
- Vardhman Mahaveer Open University, Kota — for completing a graduation alongside shorthand practice — कोटा, राजस्थान (https://www.vmou.ac.in/)
- Government colleges across Rajasthan — B.A., B.Com. and B.Sc. at very low fees — लगभग हर ज़िले में (https://hte.rajasthan.gov.in/)

ऑनलाइन

- राजस्थान उच्च न्यायालय — भर्ती की सूचनाएँ यहीं आती हैं — जोधपुर एवं जयपुर पीठ (https://hcraj.nic.in/hcraj/recruitment.php)
- राजस्थान उच्च न्यायालय — नियमावली, जिसमें कर्मचारी सेवा नियम 2002 है — दोनों भाषा-समूहों की गति एवं समय मूल दस्तावेज़ में देखें (https://hcraj.nic.in/hcraj/rules.php)
- राजस्थान उच्च न्यायालय — मुख्य वेबसाइट — न्यायालय का आधिकारिक पोर्टल (https://hcraj.nic.in/)

- आर.एस.एस.बी. — पिछले प्रश्न-पत्र, उत्तर कुंजी व पाठ्यक्रम (निःशुल्क) — राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड की आधिकारिक साइट — तैयारी के लिए सबसे भरोसेमंद निःशुल्क सामग्री (https://rsmssb.rajasthan.gov.in/show_archived?menuName=Xj4lCb9vGxpQnfLs%2FxlZ2g%3D%3D)
- विभागीय सेवा नियम (कार्मिक विभाग) — पद की योग्यता व आयु मूल दस्तावेज़ में पढ़ें — कार्मिक विभाग हर संवर्ग के सेवा नियम प्रकाशित करता है। किसी भी कोचिंग सामग्री से पहले यही पढ़ें — योग्यता, आयु और भर्ती की विधि यहीं तय होती है। (https://dop.rajasthan.gov.in/)
- स्वयं (SWAYAM) — भारत सरकार के निःशुल्क ऑनलाइन कोर्स — निःशुल्क (https://swayam.gov.in/)
- राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI) — निःशुल्क पुस्तकें व अध्ययन सामग्री (https://ndl.iitkgp.ac.in/)
- एन.सी.ई.आर.टी. — निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें — सामान्य ज्ञान, गणित व विज्ञान की नींव (https://ncert.nic.in/)

फ़ीस

शैक्षणिक लागत एक साधारण स्नातक की है और वह राजस्थान के राजकीय महाविद्यालयों में बहुत कम पड़ती है; काम के साथ पढ़ना हो तो वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा से भी किया जा सकता है। कंप्यूटर की शर्त पर यहाँ कोई पैसा नहीं लगता, क्योंकि नियम केवल प्रारंभिक ज्ञान माँगता है और किसी प्रमाण-पत्र का नाम नहीं लेता। असली निवेश आशुलिपि सीखने में है, और यहीं चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए। राजकीय आई.टी.आई. एवं पॉलिटेक्निक संस्थानों में आशुलिपि एवं सचिवीय अभ्यास के पाठ्यक्रम बहुत कम शुल्क पर उपलब्ध हैं और निजी संस्थानों की तुलना में यही सबसे किफ़ायती रास्ता है। भाषा का चुनाव भी लागत को प्रभावित करता है: हिंदी आशुलिपि की गति-शर्त कम है (70 के मुक़ाबले 80 शब्द प्रति मिनट) और उतारने का समय अधिक (70 के मुक़ाबले 60 मिनट), इसलिए हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी को उसी लक्ष्य तक पहुँचने में कम महीने लगते हैं — और महीने ही इस पद की असली मुद्रा हैं। टंकण का अभ्यास किसी भी साधारण कंप्यूटर पर निःशुल्क होता है, और वही 8,000 डिप्रेशन प्रति घंटा का मानक इसी न्यायालय के कनिष्ठ न्यायिक सहायक पद पर भी लगता है, इसलिए एक अभ्यास दो पदों की तैयारी करता है। एक चेतावनी: भर्ती दिलाने का दावा करने वाले किसी बिचौलिये को पैसा न दें।

छात्रवृत्तियाँ

- Mukhyamantri Anuprati Coaching Yojana (free coaching, apply via SSO) (https://sso.rajasthan.gov.in/signin)
- Rajasthan Social Justice and Empowerment Dept scholarships (https://sje.rajasthan.gov.in/)
- National Scholarship Portal (NSP) (https://scholarships.gov.in/)
- Buddy4Study scholarship search (https://www.buddy4study.com)

6 काम कैसा होता है

कहाँ काम

राजस्थान उच्च न्यायालय — जोधपुर की प्रधान पीठ तथा जयपुर पीठ। काम न्यायाधीश के कक्ष एवं न्यायालय परिसर के भीतर होता है।

कार्य-संस्कृति

यह पद न्यायाधीश के निकट काम करता है और उसकी लय न्यायालय के दिन से बँधी रहती है — सुनवाई के समय श्रुतलेख, फिर उसे उतारना, फिर आदेश एवं निर्णय की प्रतियाँ तैयार करना। दबाव मौसमी होता है: जिन दिनों निर्णय सुनाए जा रहे हों अथवा अवकाश निकट हो, समय-सीमा कड़ी हो जाती है। इस पद की सबसे बड़ी माँग सटीकता की है और उसका कारण सामान्य कार्यालयी काम से अलग है — जो शब्द आप उतारते हैं वे न्यायालय के आदेश का पाठ बनते हैं, और उनमें हुई चूक किसी पक्षकार के अधिकार को प्रभावित कर सकती है। इसीलिए यहाँ "लगभग ठीक" जैसी कोई श्रेणी नहीं होती। गोपनीयता भी इस पद का पेशेवर अनुशासन है, क्योंकि निर्णय सुनाए जाने से पहले उसकी सामग्री आपके सामने होती है। वातावरण औपचारिक है और पदानुक्रम स्पष्ट। इसके बदले में जो मिलता है वह असामान्य है: विधि की डिग्री के बिना न्यायपालिका के भीतर स्थायी सेवा, न्यायालय की कार्यवाही को सबसे निकट से देखने का अवसर, तथा एक ऐसा कौशल जो सेवा के भीतर एवं बाहर दोनों जगह मूल्य रखता है।

कौन नौकरी देता है

- राजस्थान उच्च न्यायालय — जोधपुर की प्रधान पीठ
- राजस्थान उच्च न्यायालय — जयपुर पीठ
- अधीनस्थ न्यायालयों के आशुलिपिक पद, जो अलग नियमावली से चलते हैं
- राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार के आशुलिपिक संवर्ग, जहाँ यही कौशल चलता है

माँग (2026)

न्यायालय में श्रुतलेख एवं आदेश-लेखन का काम स्थायी है और उच्च न्यायालय का कर्मचारी-वर्ग बना रहता है, इसलिए इस संवर्ग की आवश्यकता निरंतर है। साथ में तीन बातें ईमानदारी से जान लेनी चाहिए। पहली, संवर्ग छोटा है और भर्ती हर वर्ष नहीं आती — इसे अकेली योजना बनाकर नहीं चलना चाहिए। दूसरी, यह विशिष्ट कौशल वाला पद है और उसका गणित अभ्यर्थी के पक्ष में जाता है: आवेदक बहुत होते हैं, पर आशुलिपि की निर्धारित गति तक वास्तव में पहुँचने वाले बहुत कम रह जाते हैं, इसलिए जो व्यक्ति गति साध लेता है उसके लिए प्रतिस्पर्धा उतनी बड़ी नहीं रहती जितनी आवेदकों की संख्या से लगती है। तीसरी, भाषा का चुनाव इस गणित को और बदल देता है — हिंदी समूह की शर्तें आसान हैं, इसलिए हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी के लिए यह पद इस पोर्टल की सबसे अनुकूल राहों में से एक है। इसके अतिरिक्त यही कौशल राज्य एवं केंद्र सरकार की आशुलिपिक भर्तियों, अधीनस्थ न्यायालयों तथा निजी क्षेत्र के सचिवीय पदों में भी चलता है, इसलिए तैयारी एक ही पद पर निर्भर नहीं रहती। एक बात स्पष्ट रहे — ऊपर दी गई "माँग" पदों की संख्या बताती है, आपके चयन की संभावना नहीं। चयन खुली प्रतियोगिता से होता है और आवेदन करने वालों की संख्या पदों से कई गुना अधिक रहती है, इसलिए अधिकांश अभ्यर्थी किसी एक भर्ती में चयनित नहीं हो पाते। यह इस करियर के विरुद्ध तर्क नहीं है — बस इसे अपनी एकमात्र योजना न बनाएँ। तैयारी के साथ-साथ पढ़ाई जारी रखें या कोई कौशल सीखें, ताकि परिणाम चाहे जो हो, वर्ष व्यर्थ न जाए।

7 आगे बढ़ने का रास्ता

1. कनिष्ठ निजी सहायक — प्रवेश-पद (2004 से पहले इसे आशुलिपिक कहा जाता था)
2. निजी सहायक श्रेणी के पद — पदोन्नति द्वारा
3. वरिष्ठ निजी सहायक — आगे की पदोन्नति पर
4. न्यायालय के कर्मचारी-वर्ग के वरिष्ठ पद — दीर्घ सेवा एवं विभागीय पदोन्नति के माध्यम से

कमाई

शुरुआत	विज्ञप्ति में घोषित पे मैट्रिक्स स्तर के अनुसार
मध्य स्तर	₹35,000 – ₹50,000 (भत्तों सहित, कुछ वर्षों की सेवा के बाद)
वरिष्ठ स्तर	₹60,000 से अधिक (भत्तों सहित, वरिष्ठ स्तर पर)

2002 के कर्मचारी सेवा नियमों में इस पद का पे मैट्रिक्स स्तर नहीं दिया गया — नियमावली वेतनमान को मुख्य न्यायाधिपति के आदेश एवं अन्य नियमों पर छोड़ती है। इसलिए आरंभिक वेतन इस पृष्ठ पर आँकड़े के रूप में नहीं लिखा गया; वह उसी चक्र की विज्ञप्ति में मिलेगा। ऊपर दिए मध्य एवं वरिष्ठ स्तर के आँकड़े अनुमानित हैं और किसी आधिकारिक वेतन-पत्रक से पुष्ट नहीं; उन्हें दिशा समझें, वचन नहीं। एक बात ध्यान में रखने योग्य है: यह विशिष्ट कौशल वाला पद है और ऐसे पदों का वेतनमान प्रायः उसी योग्यता वाले सामान्य लिपिकीय पदों से ऊपर रहता है — पर यह न्यायालय का अपना संवर्ग है और उसकी सेवा-शर्तें राज्य सरकार की नियमावली से भिन्न हैं, इसलिए तुलना विज्ञप्ति देखे बिना न करें। शुरुआती वेतन का आँकड़ा मूल वेतन है, ताकि इसे दूसरे करियर के साथ सीधे तुलना किया जा सके। इस पर महँगाई भत्ता (1 जनवरी 2026 से मूल वेतन का 60%) एवं मकान किराया भत्ता अलग से जुड़ते हैं, इसलिए हाथ में आने वाली राशि इससे काफ़ी अधिक होती है। मध्य-स्तर व वरिष्ठ स्तर के आँकड़े भत्तों सहित अनुमानित मासिक आय हैं, मूल वेतन नहीं। ध्यान दें — राजस्थान में सीधी भर्ती से लगे कर्मचारी पहले 2 वर्ष परिवीक्षाधीन प्रशिक्षणार्थी रहते हैं और इस अवधि में वेतनमान नहीं, बल्कि एक नियत पारिश्रमिक मिलता है; इन दो वर्षों में महँगाई भत्ता व मकान किराया भत्ता देय नहीं होते (राजस्थान सेवा नियम, नियम 7(30क))। पूरा वेतनमान परिवीक्षा पूरी होने के बाद लागू होता है। इस पद का पे मैट्रिक्स स्तर इस पृष्ठ पर आधिकारिक दस्तावेज़ से पुष्ट नहीं किया जा सका — न सेवा नियमों में, न सी.ई.टी. नियम 2022 की अनुसूची में। इसलिए यहाँ कोई स्तर नहीं लिखा गया है। सही आँकड़ा उस भर्ती की आधिकारिक विज्ञप्ति में दिया जाता है; आवेदन से पहले उसे अवश्य देखें। ऊपर दिए गए आँकड़े राजस्थान के सातवें वेतन मैट्रिक्स पर आधारित हैं, जो 17 अगस्त 2026 तक लागू है। आठवें केंद्रीय वेतन आयोग के गठन की शर्तें 28 अक्टूबर 2025 को स्वीकृत हुई थीं और आयोग को गठन से 18 माह के भीतर सिफ़ारिशें देनी हैं। राज्य सरकारें केंद्रीय वेतन आयोग की सिफ़ारिशें आमतौर पर कुछ संशोधनों के साथ, और कुछ देर से, लागू करती हैं — इसलिए राजस्थान का वेतनमान भी आगे संशोधित होगा, यद्यपि कब और कितना, यह अभी तय नहीं है।

8 अच्छी बातें · चुनौतियाँ

अच्छी बातें

- हिंदी समूह की शर्तें दोनों मापों पर आसान — 70 शब्द प्रति मिनट की गति एवं 70 मिनट का समय
- कंप्यूटर की शर्त पर कोई प्रमाण-पत्र आवश्यक नहीं, केवल प्रारंभिक ज्ञान
- विधि की डिग्री के बिना न्यायपालिका के भीतर स्थायी सेवा, किसी भी विषय के स्नातक के लिए
- आशुलिपि की गति तक पहुँचने वाले कम होते हैं, इसलिए वास्तविक प्रतिस्पर्धा आवेदकों की संख्या से छोटी

चुनौतियाँ

- आशुलिपि एवं टंकण दोनों साधने पड़ते हैं, और आशुलिपि वर्ष भर का अभ्यास माँगती है
- भाषा-समूह का चुनाव आरंभ में ही करना पड़ता है और बाद में बदलना कठिन है
- संवर्ग छोटा है और भर्ती हर वर्ष नहीं आती
- सटीकता की माँग असामान्य रूप से ऊँची, क्योंकि उतारा गया पाठ न्यायालय का आदेश बनता है

9 अगर यह रास्ता न बने तो

एक परीक्षा या एक प्रयास से रास्ता बंद नहीं होता। इन्हीं विषयों से ये रास्ते भी खुलते हैं — इनमें प्रवेश आमतौर पर आसान होता है और आगे चलकर इसी क्षेत्र में लौटा जा सकता है।

- कनिष्ठ न्यायिक सहायक — राजस्थान उच्च न्यायालय
- पटवारी (राजस्व विभाग, राजस्थान)
- आशुलिपिक व निजी सहायक ग्रेड-II (राजस्थान सरकार)

10 स्रोत व आगे पढ़ें

1. राजस्थान उच्च न्यायालय — कर्मचारी सेवा नियम, 2002 (22.07.2026 तक संशोधित) — https://hcraj.nic.in/hcraj/hcraj_admin/uploadfile/rule/uploaded178479922536.pdf

2. राजस्थान उच्च न्यायालय — भर्ती — https://hcraj.nic.in/hcraj/recruitment.php

3. राजस्थान उच्च न्यायालय — नियमावली — https://hcraj.nic.in/hcraj/rules.php

4. तकनीकी शिक्षा निदेशालय, राजस्थान — आशुलिपि एवं सचिवीय अभ्यास के पाठ्यक्रम — https://dte.rajasthan.gov.in/

5. राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (आधिकारिक) — https://rssb.rajasthan.gov.in/

6. कार्मिक विभाग, राजस्थान — सेवा नियम — https://dop.rajasthan.gov.in/

7. आठवाँ केंद्रीय वेतन आयोग — मंत्रिमंडल की स्वीकृति (पी.आई.बी., 28 अक्टूबर 2025) — https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2183289

और 770+ करियर — पूरा पोर्टल

रुचि व योग्यता परीक्षण, सरकारी नौकरियाँ, कौशल पाठ्यक्रम, बायोडाटा बनाने की सुविधा — सब मुफ़्त, बिना लॉगिन, इंटरनेट के बिना भी।

career.gsssjethantri.in